का प्रयोग कविता को सहज संवेद्य बनाता है।

नागार्जुन की कविता में जनजीवन

नागार्जुन का जन्म एक रूढ़िवादी मैथिल ब्राह्मण परिवार में हुआ। चार वर्ष की अवस्था वाले बालक नागार्जुन को माता का वियोग सहना पड़ा। बाद में जिस पिता ने पालन-पोषण किया, वे अत्यधिक रूढ़िवादी, दरिद्र, संस्कारहीन और कठोर स्वभाव के व्यक्ति थे। नागार्जुन ने अपने जीवन में जिन संघर्षों का सामना किया, उन्होंने नागार्जुन को तपाकर कुन्दन बना दिया। जीवन के कटु संघर्षों ने नागार्जुन को प्रगतिशीलता के साथ जोड़ दिया। नागार्जुन की विचारधारा जनवादी बनाने में **स्वामी सहजानन्दजी** का पर्याप्त प्रभाव रहा है।

नागार्जुन ने एक सामान्य व्यक्ति के समान सामाजिक यथार्थ को देखा ही नहीं, अपितु भोगा भी, इस कारण वे सामाजिक यथार्थ से पूर्णरूप से परिचित हो सके हैं। नागार्जुन ने अपने युग में होने वाली सभी सामाजिक हलचलों, समस्याओं तथा परिस्थितियों को प्रत्यक्ष रूप से देखा एवं भोगा, इस कारण ये उनका गम्भीरतापूर्वक अध्ययन कर सके। दलित वर्ग को अभावों की चक्की में पिसता हुआ नागार्जुन ने अपनी आँखों से देखा है। स्वतंत्र भारत में सबको अन्न उपलब्ध। कराना शासन का दायित्व है। कोई व्यक्ति भूख से मर जाये, यह शासन का दोष माना जाता है। इस कारण स्वतन्त्र भारत में भूख से मरने वालों की मृत्यु के अन्य कारणों की कल्पना करके प्रचारित किया जाता है, जिससे देश में भुखमरी होने की घोषणा असत्य सिद्ध की जा सके। इस व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए नागार्जुन ने 'प्रेत का बयान' शीर्षक कविता की रचना की है। प्राइमरी स्कूल का एक मास्टर मरकर यमराज के समक्ष पहुँचा। यमराज ने उससे मृत्यु का कारण पूछा तो वह बोला—

जात का कायस्थ
उमर कुछ अधिक पचपन साल की
पेशा से प्राइमरी स्कूल का मास्टर था,
तनखा दी तीन रुपया, सो भी नहीं मिली
मुश्किल से काटे हैं
एक नहीं, दो नहीं, नौ-नौ महीने
घरनी थी, माँ थी, बच्चे थे चार
आ चुके हैं वे भी दयासागर, करुणा के अवतार
आप ही की छाया में।

तीन रुपया मासिक वेतन में सात प्राणी बड़ी कठिनाई से गुजारा करते होंगे। वह मासिक वेतन भी नौ महीने तक नहीं मिला तो मास्टर के अतिरिक्त सभी लोग भुखमरी के शिकार हो गये। समाज में यह स्थिति तो सरकारी नौकरी करने वाले प्राइमरी स्कूल के मास्टर की थी। जो लोग बेकार थे, जिनके पास जाविका का कोई साधन नहीं था, उनकी दुर्दशा की सहज ही कल्पना की जा सकती है।

यमराज को पता चल चुका था कि प्राइमरी स्कूल के इस मास्टर की मृत्यु भूख से हुई है, स्वतन्त्र भारत के नागरिक का प्रेत यह स्वीकार नहीं करता। यमराज ने उस प्रेत की बात पर विश्वास न करते हुए कहा—

भभाकर हँस पड़ा नरक का राजा
दमक उठीं झालरें कम्पमान सिर के मुकुट की
फर्श पर ठोंककर सुनहला लौह दंड
अविश्वास की हँसी हँसा दण्डपाणि महाकाल,
बड़े अच्छे मास्टर हो।
आये हो हमको पढ़ाने।

Scanned with CamScanner

मैं भी बच्चा हूँ
वाह भाई वाह!
तो तुम भूख से नहीं मरे?

स्वतन्त्र भारत के नागरिक का प्रेत भूख से मरना कैसे स्वीकार कर लेता? वह अपनी सरकार की छवि धूमिल कर लेता? उसने यमराज को उत्तर दिया—

हद से ज्यादा डालकर जोर
होकर कठोर
प्रेम फिर बोला—
अचरज की बात नहीं
यकीन नहीं करते आप क्यों मेरा?
कीजिए, न कीजिए, न आप चाहे विश्वास
साक्षी है धरती, साक्षी है आकाश
और-और-और-और-और भले
नाना प्रकार की व्याधियाँ हों भारत में
× × × ×
किन्तु
भूख या क्षुधा नाम हो जिसका
ऐसी किसी व्याधि का पता नहीं हमको।

भूख आज स्वतन्त्र भारत में भयंकर समस्या बनी हुई है। शासन के पास अन्न रखने को स्थान नहीं है, पर भूखों को रोटी नहीं मिल पाती। आज भारत का किसान अनेक प्रकार की कठिनाइयों से जूझ रहा है। आज मजदूर शोषण का शिकार हो रहा है। मध्यम वर्ग विभिन्न समस्याओं के जाल में फँसकर तड़फड़ा रहा है। निम्न वर्ग रात-दिन मेहनत करके भी पेट भर भोजन नहीं पाता है। वह कदम-कदम पर ठुकराया और अपमानित किया जा रहा है।

दूसरी ओर उच्च वर्ग के लोग वैभव और विलास के पालने में झूल रहे हैं। वे आमोद-प्रमोद का जीवन बिता रहे हैं। उच्च वर्ग के लोग काम नहीं करते, दूसरों की कमाई खाते हैं। वे साधारण जनता को पीड़ा, कष्ट और व्यथा प्रदान करने में ही आनन्द का अनुभव करते हैं। स्पष्ट है कि स्वतन्त्र भारत के अधिकांश जन अनेक प्रकार के अभावों तथा सामाजिक कष्टों से पीड़ित हैं। इस प्रकार का जन-जीवन कविवर नागार्जुन के हृदय में इस कारण पीड़ित व्यथित एवं संत्रस्त कर रहा है कि नागार्जुन ने यह व्यथा देखी ही नहीं, भोगी भी है। जब नागार्जुन यह देखते हैं कि आज किस प्रकार नेतागण मुखौटा लगाकर जनता के साथ लगातार असत्य व्यवहार कर रहे हैं तो उसका मन पुकार उठता है—

जमींदार है, साहूकार है, बनिया है, व्यापारी है,
अन्दर-अन्दर विकट कसाई बाहर खद्दरधारी है।
सब घुस आये, भरा पड़ा है भारत-माता का मन्दिर,
एक बार जो फिसले अगुआ, फिसल रहे हैं फिर, फिर, फिर

कवि नागार्जुन ने स्वतन्त्र भारत की इस सामाजिक विषमता को देखा, जो सुरसा राक्षसी के मुँह के समान बढ़ती ही जा रही है। इसका दोषी नागार्जुन सामाजिक एवं राजनीतिक नेताओं को मानते हैं। नेताओं को खद्दर का और व्यापारियों को मलमल का प्रतीक देते हुए नागार्जुन पुकार उठे—

खादी ने मलमल से अपनी साँठ-गाँठ कर डाली है।
बिरला, टाटा, डालमियाँ की तीसों दिन दीवाली है।

Scanned with CamScanner